रात्रि का क्लास 7/6/64 :– तुम बच्चे हो ब्राह्मण कुल में। फिर विष्णु के कुल के बनेंगे। तो नशा होना चाहिए न! अब सन्मुख बापदादा बैठे हैं, उन द्वारा हम जो ब्राह्मण कुल के हैं, सो फिर विष्णु कुल के बनेंगे। यह समझने की बात है। ऐसे नहीं, जो कहा सत्। अंधश्रद्धा की बात नहीं है। यह समझना है– बाबा, आपकी बात सत्य है, अभी हम ईश्वरीय कुल के सो ब्राह्मण कुल के हैं। बाबा कहते हैं, ब्रह्मा मुख द्वारा तुम बच्चों को गोद लेता हूँ। यह राजयोग सीख, फिर पालना के लिए विष्णु कुल का बनना पड़ेगा। यह भारत के लिए ही समझाया है। बाप आकर सिकीलधे बच्चों को समझाते हैं– आत्माएँ प० अलग रहे बहुकाल। नई आत्मा भी आती है, उनके लिए तो नहीं कहेंगे– बहुत काल की बिछुड़ी हुई है। बाबा सब शुभ कामनाएँ पूरी करते हैं। माया रावण अशुद्ध पूरी करती हैं। बच्चे जानते हैं, बाबा ज्ञान का सागर है। कहते हैं– आज तुमको नई बात सुनाता हूँ। कोई शास्त्र आदि हाथ में नहीं है। विद्वान आदि जो शास्त्र पढ़े होंगे, वह बुद्धि में रहेगा। बाप तो इन सबको जानते हैं। बाप कहते हैं, मैं सब इन शास्त्रों को जानता हूँ। यह है रुद्रमाला। अभी ब्राह्मणों की माला फाइनल अंत में होगी। अभी कमाई में दशा बैठती है। ब्राह्मणों की माला बन रही है। फाइनल रुद्रमाला होगी। क्लास ट्रान्सफर होगा। बच्चों को समझना चाहिए, बरोबर हम ब्राह्मण कुल के बने हैं। 84 जन्म पूरे हुए, अभी है अन्तिम सुहावना जन्म। यहाँ प्रैक्टिकल में बलि चढ़ते हैं। इसको जीते जी मरजीवा जन्म कहा जाता है। पूछते हैं– ड्रामा कब शुरू हुआ? बोलो, यह अनादि है। हाँ, वर्ल्ड की हिस्ट्री रिपीट करती है। बाप कहते हैं, मैं कल्प के युगे–2 आता हूँ। बाप आकर कितना समझदार बनाते हैं। ॐ, बापदादा, मीठी माँ का सिकीलधे बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडनाइट।